

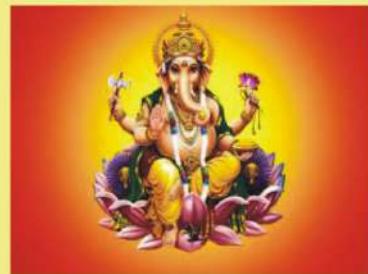
अम्बिका चरित्र

शुभ निशुभ वध



श्री दुर्गासप्तसती के उत्तम चरित्र की कथा
मधुर राग रागनियों में वर्णित

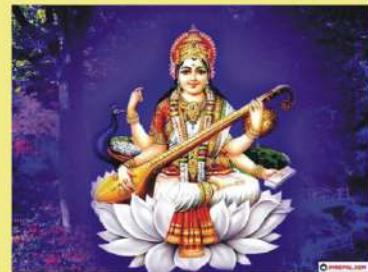
रचियता
रामचन्द्र माथुर 'वीरमणी'
(स्वामी दिव्यानन्दजी)



।। श्री गणपति स्तुति ।।

राग : श्याम कल्याण

नमो नमो हिमगिरी कन्या कुमार ।। टेर ।।
गज मुख वंता, अरु इक दंता, मूसक है असवार ।।
मंगल मोद आनंद बधावन, रिक्षी सिक्षी दातार ।।
जस वरनूँ जगदम्ब अम्बको, बाधा विघ्न निवार ।।



।। श्री सरस्वती स्तुति ।।

तर्ज : अम्बाजी री मैंदी माणक रंग ।

निश दिन सुमिरुँ शारद मात ।

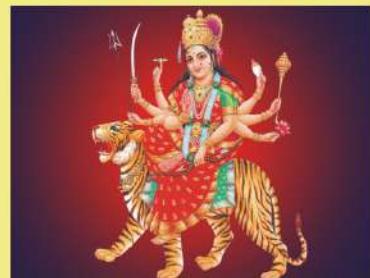
डण्ड कमण्डल स्फाटिक माला, वीणा पुस्तक हाथ ।।
वाणी बुक्षिं विमल कर दीजे, दास राम बलिजात ।।



।।श्री गुरु धार्थना ।।

अनाथ हूँ गुरुलाय मेरी बेग सुध लीजिए,
बेग सुध लीजिए, सनाथ मोहे कीजिए, अनाथ
हूँ ।।ठेर ।।

तेरे पद कमल में भमर बन मन मेरा, चरण सुधा पान
करें ये ही वर दीजिए, अनाथ हूँ ।।1।।



।।देवी धार्थना ।।

तर्ज : बैठी जपुं सीताराम तुलसी की माला ले दो ।
मोय दीजे वरदान देवी शरण तेरी आयोरी ।।ठेर ।।

हेरी वरनूं, हेरी वरनूं सुजस मां थारोरी,
कर वाणी रो विकास देवी शरण तो री आयोरी, शरण
तेरी आयोरी ।।1।।

चरण कमल को, चरण कमल को 'राम' बलिहारी जी,
ओ तो कोटि कोटि बार देवी शरण तोरी आयोरी, शरण
तेरी आयोरी ।।2।।

कथा आरम्भ

राजा वेशम्पायनजी श्री वेदव्यासजी से प्रश्न करते हैं ।

तर्ज़ : अब करिये कि से प्यार यार खुद गरज
जमाना ।

मोय दीजे कथा सुनाय नृपति यूं वचन उचारे है,
नृपति यूं वचन उचारे है । ।ठेर ।

सुनते है प्राचीन समय में दैत्य बड़े बलवान,
जग विख्यात भये दोऊ भाई, शुभ निशुभ है नाम,
भये सब देव दुखारे है । ।1।।

किम कर ये पाताल लोक से मृत्यु लोक रहे आय,
किमकर फिर तपरस्या किनी गुरु तीरथ पर जाय,
दीये वर जग करतारे है । ।2।।

वर पाकर ब्रह्मा से दोनों देव लोक को जाय,
पकड़ बांध कर सब देवन को कैसे इन्द्र हराय,
दियो गद्दी से उतारे है । ।3।।

किम कर अस्तुति देवन ने करके करी पुकार,
किमकर फिर परसन्न होय कर चण्डी ले अवतार
दीये सब दैत्य विडारे है । ।4।।

तर्ज - नाथ बिन बिगड़ी कौन बनाये ।

राज ऋषि राजा से फरमावें अरु यूं कथा
सुनावे । ॥टेर ॥

पाताल लोक जो पृथ्वी तल में,
जन्म लियो वहां दानव दल में, शुभ निशुभ कहावे,
अरु यूं कथा सुनावे । ॥1॥

बालक थे जब दोनों भाई,
भूमण्डल देखन के ताई, मृत्युलोक में आवे,
अरु यूं कथा सुनावे । ॥2॥

काल व्यतीत हुवो जिमि जाई,
बाला बीती तरुणा आई,, तप करने को चावे,
अरु यूं कथा सुनावे । ॥3॥

धार यही निश्चय मन माही,
पुष्कर राज गये दोउ भाई, ध्यान समाधि लगावे,
अरु यूं कथा सुनावे । ॥4॥

करते यूं तपरस्या भारी,
बरस बीत गये दस हजारी, ब्रह्मा प्रसन्न होय जावे,
अरु यूं कथा सुनावे । ॥5॥

**तर्ज - गुरुनाथ है प्राण हमारा विधि ऐसा वचन
उचारा ।**

कर जोर अरज गुदरावें वरदान यही हम पावें । ॥टेर ॥

संसार चक्र के मांही, हेरी संसार चक्र के मांही, कोई
काल बली सम नाहीं जी, क्या राव रंक सब जावे,
वरदान यही हम पावे । ॥1॥

यह अभयदान बगसीजे, हेरी ये अभयदान बगसीजे,
अरु मनवांछित वर दीजेजी, हम अजर अमर होय
जावे, वरदान यही हम पावे । ॥2॥

राग - चौपाई

तर्ज - जै, जै, जै, गिरीराज किशोरी ।

सुनत वचन विधि मन मुसकाई,
अरु यूं वचन कहत समझाई । ॥1॥

या संसार चक्र के माँई,
काल समान बली कोई नाई जी । ॥2॥

क्या राजा क्या तुच्छ भिखारी,
जीव जन्तु सब ही देहधारी । ॥3॥

जो कोई जनमे है सोई जाई,
काल बलि सब ही को खावे । ॥4॥

यह अनुचित वचन तज देवो,
अरु कछु और मांग ले लेवो । ॥5॥

राज पाट धन धाम सुहाई,
मांग लेवो सब कछु मन चाई । ॥6॥

तर्ज - नरसिंह रूप हरि धरे ।

कछु हेर फेर चतुराई, अरु बोले वचन
बनाई । ।ठेर । ।

पशु पक्षी पुरुष कहावे, नहीं मार न हमें सकावे,
यह वर मांगे सिरनाई । ।1 । ।

फिर स्त्री से जग माई, कछु हमको भय भी नाई,
वह अबला नाम कहाई । ।2 । ।

यदि देना ही जो विचारा, अब देदो यही करतारा,
हम सफल होवे वर पाई । ।3 । ।

राग - मांड

तर्ज - त्रिपुराय मांजी आपरो मानो घनो छै
विश्वास ।

सुन शुभ्म को राज्यभिषेक हुओ सब आये दैत्य
समाज । ।ठेर । ।

चण्ड अरु मुण्ड बड़े प्ररचण्ड जो योद्धा बड़े बलवान्,
लेकर के निज फौजन वृंद यूं आये करन
सम्मान । ।1 । ।

धूमरलोचन नाम महाबली, काल समान कराल,
रक्तबीज राक्षस रणबंका, आये पास नृपाल । ।2 । ।

छोटे और बड़े कई दानव सेना सहित अपार, हरित,
घोड़ा, रथ अरु पैदल, शुभ्म सोहे दरबार । ।3 । ।

राग - गजल

तर्ज - राम दशरथ को घर जन्मे,
घराना हो तो ऐसा हो ।

इन्द्र अरु देव सब जाई, कहे गुरु से यूं
शिरनाई । ।ठेर ।
वेद अरु शास्त्र के ज्ञाता, सर्व गुणवान हो ताता, बता
तदबीर कछु दीजे विडारे दैत्य दुखदाई । ।1 । ।

राग - गजल

तर्ज - उठो रघुनाथ जन प्यारे, सभी धनु देख हिय
हारे ।

कहे गुरु राज समझाई, धरो कछु धीर मनमाई । ।ठेर । ।
जगत जननी महामाया, सदा संतन की सुखदाया,
परे जब भीर भक्तन में करे झट आय के सहाई । ।1 । ।
हिमालय नाम गिरी भारी, धाम रमणीक मन हारी,
चरण रज वहां गहो जाई, जहां चण्डी महामाई । ।2 । ।
धार कर के जो अवतारा, जिन्होंने महीष को मारा,
गहो अब उसही का सहारा, अन्य तदबीर कोउ
नाई । ।3 । ।



तर्ज - बहार मेरे प्यारे फूलन की लेलो बहार ।
सहाय जगदम्बे कीजो हमारी सहाय, आये है हम तो
शरण में तिहारी, कीजो हमारी सहाय । ।ठेर । ।

महिमा तिहारी अगम्य अपारी, गावे है वेद पुराणा,
पुराण जगदम्बे कीजो हमारी सहाय । ।1 । ।

विश्व चराचर को कर कर के पालन, देती हो अंत खपाय,
खपाय जगदम्बे कीजो हमारी सहाय । ।2 । ।

ब्रह्मा ओ विष्णु महेश रटत है, पावे नहीं कोई पार,
पार जगदम्बे कीजो हमारी सहाय । ।3 । ।

हमतो अज्ञानी कछु नहीं जाने, भक्ति को नाम निशान,
निशान जगदम्बे कीजो हमारी सहाय । ।4 । ।

शुभ्मादि दैत्य बड़े अभिमानी, देते हैं दुख अपार,
अपार जगदम्बे कीजो हमारी सहाय । ।5 । ।

आकर मां शीघ्र ही इनको संहारो, देवो भू भार उतार,
उतार जगदम्बे कीजो हमारी सहाय । ।6 । ।

राग - टोडी

तर्ज - भोर भये जब चलो अंबिका पूजन
राज दुलारी ।

होय प्रसन्न भवानी मैया, प्रकट रूप दरशायो
हेरी, होय प्रसन्न । ।ठेर । ।

ज्वाला जाग उठी इक तन से,
दिव्य रूप प्रगटायो हेरी । ।1।।

कृष्ण वरण विकराल शरीरा,
काली नाम कहायो हेरी । ।2।।

एक भयकारी अळ इक सुन्दर,
मनहर रूप धरायो हेरी । ।3।।

दरशन कर हरषे सब देवा,
मनवांछित वर पायो हेरी । ।4।।

राग - ठुमरी

तर्ज - क्या जो कहूँ मेरे तन मन की ज्वाला
जानत हो सब घट घट री ।

चण्ड अरु मुण्ड गये दोऊ भाई,
निज खामी से खबर कराई । ॥टेर ॥

पुष्प वाटिका में इक युवती,
आई है सिणगार सजाई । ॥1॥

रूप अनूप लहे नहीं उपमा,
मुख शोभा लखि चन्द्र लजाई । ॥2॥

सिंह चढ़न जाके असवारी,
अरु इक डाकिन बगल दबाई । ॥3॥

मधुर मधुर खर से मनहारी,
गावत राग है मन हरसाई । ॥4॥

ना देखी ना कान सुनी हम,
ऐसी सुन्दर और लुगाई । ॥5॥

निश्चय कर यह तुमरे योगु,
निज पत्नी ले लेवो बनाई । ॥6॥

ना जाने यह किसकी जाई,
ना जाने यहां किऊं कर आई । ॥7॥

राग - मारु

तर्ज - सावण की बड़ी तीज सहेल्यां सब मिल नावण
चालीजी ।

आदर सहित सुग्रीव ही बोल्यो अरु यूं वचन सुनायो
जी, राजा शुभ्म संदेशो भेज्यो, लेकर मैं हूँ
आयोजी । ।टेर । ।

क्या भूतल पाताल स्वर्ग क्या, तीन लोक के मार्झ जी,
शुभ्म समान बली नृप दूजो,
निश्चय कर कोई नार्झ जी । ।1 । ।

लोकपाल पित्रादी देवता, सहित ही इन्द्र हरायो जी,
स्वर्ग लोक को जीत लियो है,
अरु सब वैभव पायोजी । ।2 । ।

सुनत राव रो रंग स्वरूपा, राजा मन हरषार्झ जी,
छिन 2 छिन 2 पल पल रूप सदावे,

अरु बहु करत बढ़ार्झ जी । ।3 । ।

राज पाट धन धाम भोग सब, अरु मौजा मन मानी
जी, राजा शुभ्म दास बन रहसी,

आप होऊ पटरानी जी । ।4 । ।

मैं हूं दूत मेरो यही कामा, याते क्रोध मत कीजेजी
सोच विचार शीघ्र मन मांही,

उत्तर देदीजेजी । ।5 । ।

तर्ज - कानो मुख से न बोले बाजूबन्द खोले ।

बोली मन मुसकाई, यूं महामाई । ।ठेर ।

जानत है हम निश्चय करके शुभ बड़ो बलवाना,
इनके सम दूजो कोई नाई,

तीन लोक में है इनकी बड़ाई, यूं महामाई । ।1।।
तीन लोक को जीत जिन्होंने है ऐसा वैभव पाया, पकड़
बांध कर सब देवन को,

और दियो है जिन इन्द्र हराई, यूं महामाई । ।2।।
रूप रंग सुन्दरताई में, है कोई दूजो नाही, यह सब
जानल निश्चय करके,

ब्याह करन को हम यहां आई, यूं समझाई । ।3।।
पर इक प्रण हमने है ठाना बालपने से मन माई, या ही
को हम पति करेंगी,

देख बला बल करके लड़ाई, यूं महामाई । ।4।।
कर संग्राम जीत कर हमको, और ब्याव लेवो आई, येही
उत्तर लेय हमारा,

जाय देवोरे तुम शुभ सुनाई, यूं महामाई । ।5।।

तर्ज - नाचे गावे नारी प्यारी चली जाओ
बलिहारी तिहारी ।

जावोरे सेना ले जावो डरावो धमकाओ समझा ले
आवो । ।ठेर । ।

मार पीट वा को कछु ना, और कोई हो सहाई,
मारो और भगावो, डरावो धमकाओ समझा ले
आवो । ।1 । ।

जो विकराल कालिका कराल, छोड़ो नाई वां को
भाई, मुण्डन काट गिरावो, डरावो धमकाओ,

राग - पीलू

तर्ज - हो प्रभु प्यारे नन्द दुलारे, करहो कृपा
तुम मुरली वाले ।

धूम्रचोलन को समझावे, काली क्रोध कर वचन
सुनावे । ।ठेर । ।

धिक मूरख हे बुक्रि तिहारी, गति मति मात की
जान न पावे । ।1 । ।

तीन लोक को पालन हारी, शिव अर्घागिनी नाम
कहावे । ।2 । ।

यह किझे करके शुभ विवाहे, सिंहनी क्या कोई
स्थार सरावे । ।3 । ।

हस्तिनी कामातुर हो तो भी, गरदभ से नाही देह
लगावे । ।4 । ।

शुभ से जाय कहो समझा कर, युद्ध करे या पाताल
ही जावे । ।5 । ।

राग - काफी
तर्ज - कोई दिन याद करोगे रमता राम
फकीर ।

युद्ध को हाल कहे क्या, सुनिये शुंभ
महाराज ॥ठेर ॥

काली संग संग्राम हुओ सब,
हारे दैत्य समाज ॥॥1॥

सूरवीर रण खेत रहे सब,
हम आये हैं भाज ॥॥2॥

धूमर लोचन भर्म हुओ सब,
‘हूँ’ काली की आवाज ॥॥3॥

-विश्राम-

तर्ज - तोरी छल बल है न्यारी ।

सुन शुंभ यह बात बोल लियो है तात अरु सल्ला करे है
विचार चार चार । ।टेर । ।

धूमर लोचन ओ सब योऋषा, काली ने दिये सभी है
खपाय, अब लड़की नांय रहे चुप लगाय,
आवो करे यही निरधार धार धार । ।1 । ।

सुन शुंभ की बात बोल्यो निशुंभ भ्रात
कयो वचन भरयो अहंकार कार कार । ।2 । ।

शूरवीर को धर्म यही है लड़भिड़ ओ मरे रण मायं,
हम जाके ओ भाई, करके जो लड़ाई
पकड़ लायेंगे यहां वह नार नार नार । ।3 । ।

तर्ज - नरसिंह रूप हरि धारे हिरना कुश दानव मारे ।

कर चंड मुंड चतुराई, अरु बोले वचन बनाई । ॥टेर ॥

ओ शुंभ बड़ो बलवाना, क्या तुमने इन्हें न पिछाना,
जिन तीन लोक को हराई,

अरु सचिपति दियो भगाई ॥1॥

कहां शुंभ शरीर कठोरा, कहां कोमल अंग यह तोरा,
क्या र्ख्यार सिंह से जाई,

करने को कहत लड़ाई ॥2॥

हम जानत हैं यह आजा, करने को ही निज काजा,
हाँ सुरगन तोय बहकाई,

अरु मरने हेतु पठाई ॥3॥

तब अष्टाऽयुद्ध जो हाथा, अरु काली सिंह जो साथा,
नहिं एक काम कछुआई,

जब शुंभ करेगो चढ़ाई ॥4॥

हां सुरगन ओ संग्रामा, क्या इनसे तुमको कामा,
सब राज पाट अधिकाई,

लो शुंभ को पति बनाई ॥5॥

तर्ज - भजरे मन मेरे बार-बार जगदम्बा मात भवानी
है ।

सुन चंड अरु मुँड के बैन क्रोध कर बोलि अंबिका मार्झ
है । ।ठेर । ।

क्यों बक बक बक बकवाद करो,
यूँ नाहक गाल बजार्झ है, जो योद्धा हो तो युद्ध करो,
नहीं विरथा समय गंवार्झ है । ।1 । ।

क्या शुंभ निशुंभ का नाम लेत,
अरु देत हमें धमकार्झ है, ऐसे दानव हमने पहले,
अनेक दिये खपार्झ है । ।2 । ।

तुम जान लेवो निश्चय करके,
हम देत हैं सफा सुनार्झ है, हां शुंभ निशुंभ विडारन को,
हम काल रूप बन आर्झ है । ।3 । ।

हम एक एक करके मारेंगी,
सब दैत्यन के समुदार्झ है, यह जान विचार भलो अपनो,
भगजावो इसी में भलार्झ है । ।4 । ।

तर्ज - माधो बस कियोरे, कुबजा पर पड़जो बेरण बीजली ।

कांई बात बतावां हो, हाल सुणावा कांई युद्ध रो । ॥टेर ॥
शूरवीर योद्धा सगरे ही योद्धा और चण्ड मुण्ड भाई हो
राजवी, और चंड मुंड भाई, काली ने एक एक करके
सबको दिये है खपाईजी, कहां हमरी चलाई हो,

हाल सुणावा कांई युद्ध रो ॥1॥

मृत जनों की लाशों से जी, रण भूमि भर आई हो राजवी
रण भूमि भर आई, रुंडमुंड से तुम्ब तिरत है, रक्त रुधिर
के माईजी, सरिता बह आई हो,

हाल सुनावां कांई युऋ रो ॥2॥

मांसाहरी पक्षियों के हरषित है समुदाई, हो राजवी
हरषित है समुदाई, रक्तपान करने के हेतु जोगन बन चल
आई जी, पी पी के अगाई हो,

हाल सुनावां कांई युऋ रो ॥3॥

ऐसी भयंकर भूमि के जी देखत डर उर लाई हो राजवी,
देखत डर उर लाई, जीव लेय कर हम चलि आये, भाग
तोरे शरनाई जी, अब लीजे बचाई हो,

हाल सुनावां कांई युऋ रो ॥4॥

कैसो अचरज है यह ताता, साधारण सी लुगाई हो राजवी,
साधारण सी लुगाई, सहज ही में सहस्रों दानव दलन
दिये खपाई जी, कछु भेद न पाई हो,

हाल सुनावां कांई युऋ रो ॥5॥

बीती तो सो बीत गई जी, अब भी कर चतुराई हो राजवी,
अब भी कर चतुराई, सहपरिवार भगो महाराजा, भूतल
रहो बसाई जी, इसी ही में भलाई हो,

हाल सुनावां कांई युद्ध रो ॥6॥

तर्ज - किये खुश यार बदल लिपटाई, चित्तमन से सेज बिछाई ।

असुर झाट बोल उठ्यो झूंजलाई, जब शंख ध्वनि सुन
पाई । ।ठेर । ।

शंख बजाती क्या धमकाती, हो हम को मनमद लाई,
क्या तुमने जाना भग जावेंगे, करके कायरताई,

हम धूम्रलोचन नाई, जब शंख । । । ।

क्या तुम जानत हो नाही की रक्तबीज मेरो नामा, मेरे
सम योऋषा कोई नाही कर देखो तुम संग्रामा,

हम कहत तुम्हें समझाई, जब शंख । । । ।

जो तुम वेद पुराण इत्यादि षट् शास्त्रों की हो ज्ञाता, तो
इक युऋ करन के पहिले, सुन लीजे मेरी बातां,

है सत्य झूठ कछु नाई, जब शंख । । । ।

रस सिणगार रसों का राजा, है जिसके आज्ञाकारी,
ब्रह्मा विष्णु महेश देवता, जीव जन्तु सब देह धारी,

निज निज तिय संग सुहाई, जब शंख । । । ।

अब यह जान मान मन मेरी, तज रण की बातां सारी,
सब गुण रूप समान तिहारे, शुंभ सदा योद्धा भारी,

तुम भजो इसे चित्तलाई, जब शंख । । । ।

तर्ज – सखी फुलन में राजन झूलेरी झूलना ।

हँस बोली भवानी यूँ रक्तबीज से । ।ठेर । ।

मेरे संग युद्ध करजो, हाँ, हाँ, हाँ, हाँ, देवो मोकूहराय,

मैं वरलंगी ताही से, हँस बोली । ।1 । ।

लेयकर यही सूचना हाँ, हाँ, हाँ, हाँ, जावो देवो सुनाय,

सब हाल शुंभ से, हँस बोली । ।2 । ।

युऋ करे चाहे ना हाँ, हाँ, हाँ, हाँ, जावे जावे पाताल,

भाग इन्द्र लोक से, हँस बोली । ।3 । ।

तर्ज – पिया मिलन के काम आज जोगन बन

आऊंगी ।

निज निज रूप समाज शक्तियां, सुरन पठाई है । ।ठेर । ।

ब्रह्माणी हंसा असवारी, सूत्र कमण्डल कर मे धारी,,

कंठ बीच रुद्राक्ष माल धारण कर आई है । ।1 । ।

गरुड़ासन पीताम्बर धारे, शंख चक्र अरु गदा प्रहारे,

विमल कमल कर मांय वैष्णवी नाम कहाई है । ।2 । ।

माहेश्वरी वृषभा आरुढ़ा, हाथ लिये खप्पर तिरशुला,

कंकन कारी नाग माल मुण्डन लटकाई है । ।3 । ।

एक एक करके सब ही आई, दैव्या निज निज रूप बनाई,

चढ़ वाहन निज लेय अरु अरु शरन सजाई है । ।4 । ।

तर्ज - जियातर से बदरिया बरसे, सखीरी दिन कैसे कटेंगे बहार के ।

हम आये हैं कहाँ के पठाये सोई, अब कहत तुम्हें
समझाय के । ।टेर ॥

तीन लोक को हूँ सहारी, नाम मेरो त्रिपुरारी, शिव दूती
का लाया हूँ मैं संवादा, सुन लेवो यह चित्त लगाय के, हो
हम आये । ।1 ।।

र्खर्ग लोक का वैभव सारा सुरगण का अधिकारा, तज
भग जाओ इसी में भलाई, नहीं मरो यूं गाल बजाय के,
हो हम आये । ।2 ।।

तर्ज - क्या भूलिये दिवाने दुनियांमें सार नहीं ।

अब रक्तबीज उठके, करने लगा लड़ाई । ।टेर ॥

हो वैष्णवी के जोड़े, कर क्रोध बाण छोड़े,

छेदे तिन्हे उसीने निज चक्र को चलाई । ।1 ।।

यह देख अन्य देवी गण दौड़ दौड़ आई,

ले अस्त्र-शस्त्र अपने करती भई चढ़ाई । ।2 ।।

इत रक्तबीज ऐका, उत देवियां अनेका,

घमसान युद्ध होवे, डगमग धरा धुजाई । ।3 ।।

जो रक्तबीज का है, लोहू धरा गिराई,

इक बूंद का ही वैसा एक दैत्य होय जाई । ।4 ।।

यूं शंभू के रे वर से, हो एक से अनेका,

लड़ते हैं रक्तबीज गई देवियां थकाई । ।5 ।।

तर्ज - मेरे शंकर दर्शन दीनो मुझे ।

जगदम्ब भने सुरराई है, काली से कहत समझाई है । ।ठेर ।

देह विस्तारित करो अरु मुँह को फेला लेवो, रक्त की बूँदों को नाहि भूमि पै गिरने जो दो,

लेवो लोहू को पेट पचाई है । ।1।।

न रक्त भूमि पै गिरे न दैत्य जनमेंगे कभी, जो है इन्हें एक एक करके मार डारेंगे अभी,

यही जाय करोनी उपाई है । ।2।।

तर्ज - नाथ कैसे गज को फंद छुड़ाया ।

भग दानव सेना आई, हाल सब शुंभ को देत सुनाई । ।ठेर ।।

रक्तबीज योऋषि बलवाना, अरु दानव समुदाई,
जूंज मरे रण खेत परे है, किसकी कछु ना चलाई । ।1।।
ना जाने है कहाँ से आई नाना रूप धराई,

एक नहीं अनेक देवियां, लड़ने हेतु लड़ाई । ।2।।

महा विकराल कराल कालिका, चहुँ दिश मुँह पसराई,
रक्तबीज को रक्त पियो है, पी पी आज अधाई । ।3।।

हे महाराज आज हम तुमको सत्य कहत समझाई,
वह नाही कोई प्राकृत नारी, है जननी महामाई । ।4।।
वह नारी लड़ने के योगु निश्चय कर है नाई,

जान भलो अपनो अरु कुल को, लीजे जाय मनाई । ।5।।

-विश्राम-

राग - कालिंगड़ा ।

तर्ज - लालु लाज हमारी रखरे ।

हँस बोली आद भवानी । ।ठेर । ।

देखो अब ये लड़ने कारण आये हैं अभिमानी ॥1॥

देखत जिनके वंश खपायो, तो भी हमें न पिछानी ॥2॥

कछु नांही हित जानत अपनो, कैसे हैं अज्ञानी ॥3॥

ये ही हमारी माया जग में, हैं सब जगत भुलानी ॥4॥

तर्ज - मेरा जगा के जोबन लुटारी ।

घनघोर युद्ध मचायारी । ।ठेर । ।

आय निशुंभ जुड़ा चंडी संग,

खींच के बाण चलाया री ॥1॥

चंडी निज सर सांध तुरंत ही,

ताको मार गिरायारी ॥2॥

ले निज सेना अन्य असुरगण,

गरज गरज चढ़ आयारी ॥3॥

दांत कटाकट जीभ लपालप,

करते दानव धायारी ॥4॥

सिंह गरज कर दैत्य पछारे,

चीर चीर गटकायारी ॥5॥

राग - सोहनी

तर्ज - हेरी यशोदा तोसे करुंगी लड़ाई

सुनहो सुनहो सुनहो नृपराई, समर हाल हम देत
सुनाई । ।ठेर । ।

अति दारुण संग्राम हुओ हाँ,

जीते सुर सब दैत्य हराई । ।1 । ।

तात निशुम्भ महाबल धारी, और बांकी सेना सारी,

चंडी ने सब दिये है खपाई । ।2 । ।

वह नांही साधारण नारी कर देखा हमने निरधारी,

है जग जगनी वह महामाई । ।3 । ।

मानो मानो मानो म्हारी, छोड़ो छोड़ो छोड़ो रारी,

भाग चलो इसही में भलाई । ।4 । ।

राग - प्रभाती

तर्ज- जागिये गोपाल लाल नन्द के दुलारे ।

क्रोध भर बैन शुम्भ बोले अकुलाई । ।ठेर । ।

शूरवीर साथ सारो, और प्रिय भाई,

मेरे काज आज रण खेत रहे जाई । ।1 । ।

जो अबे में भागकर प्राण लूं बचाई,

कीरती न होय होय लोक में हंसाई । ।2 । ।

काल की गति को काँई सोच मन माँई,,

होनहार होय अनहोनी होय नाँई । ।3 । ।

यह विचार आज हम करेंगे लड़ाई,

लावो जाय सेना सब साज को सजाई । ।4 । ।

राग - प्रभाती

तर्ज - मैं माखन नहीं खायो मेरी मैया मैं माखन नहीं
खायोरी ।

कामातुर होय शुम्भ भने लखि, मूरती अति
मनहारी । ।टेर ॥

तुम नारी तिय धर्म निभाओ, छोड़ो युद्ध विचारी,
भौंह चढ़ाकर सैन चलाओ, धनुष बाण दो डारी । ।1 ।।

हाव भाव कटाक्ष रूप को शस्तर लेवो धारी,
उत्तम जन को लक्ष्य बनाकर घायल करो निहारी । ।2 ।।

मैं योद्धा हूँ अति बलवाना, तुम युवती सुकुमारी,
अबला पे मैं हाथ चलाकर कैसे करूँ प्रहारी । ।3 ।।

युद्ध करन की ही जो इच्छा है जो आज तुमारी,
करकस रांड को रूप बनालो, तज ये सब
सिणगारी । ।4 ।।

कछु इक क्रोध कपट कर संयुक्त, वचन न देवा उचारी,
तो हम तुम संग युद्ध करेंगे, यह निश्चय निरधारी । ।5 ।।

राग - भैरवी
तर्ज - काहु विध मिलता गिरधारी ।
हँस बोली आद भवानी । ।ठेर । ।

कारन रूप करन सुर कारज, मैं हँ यूं प्रकटानी ॥1॥
यह मेरा ही और रूप है, काली काल निशानी ॥2॥
याके संग में युद्ध करो तुम, है यह तुमरे ही समानी ॥3॥

दोहा

अस कहि बोली अंबिका काली से समझाय ।
जाओ तुम संग्राम कर देवा शुंभ खपाय । ।

राग - भैरवी

काली से शुम्भ लरे है । ।ठेर ॥

सुरमुनि सबके देखते, गदा उठाकर ऐंच ।
काली को कर क्रोध के, मारी शुम्भ ने खैंच ॥1॥
त्योंहि देवी कालिका, कर निज गदा प्रहार,
तोड़ स्वर्ण रथ शुम्भ को, सारथि डारियो मार ॥2॥
बिन रथ पैदल होय के, काली के ढिंग जाय ।
गदा उठा फिर शुम्भ ने, मारि छाति के मांय ॥3॥
बचा गदा के पात को, काली क्रोध के साथ ।
काट दिया निज खड़ग से उसका बांया हाथ ॥4॥
बिन रथ अरुं एक बाहु के, इक बाहु के जोर,
रुधिर बहाता शुम्भ है, युद्ध करे घनघोर ॥5॥
अब काली ने वेग से, जाय शुम्भ ढिंग दौर ।
सहित गदा दूजी भुजा, डारि दाहिनी ओर ॥6॥
भुजा कटत ही क्रोध कर, चल्यो काली की ओर ।
'ठहर' 'ठहर' यूं बोलतो, वचन बड़ो बर जोर ॥7॥
आते ही निज पास में, काली ने इस बार ।
खड़ग ले झट शुम्भ का, मरतक लीना उतार ॥8॥
मरतक कटते ही महा, दैत्यन का सिर ताज ।
जाय परा धरणी गिरा, प्राण निकल गये भाज ॥9॥
इस विध निज पति शुम्भ को, मरयो जान तत्काल ।
बचे हुये जो दैत्य थे, भाग चले पाताल ॥10॥

राग - भैरवी

तर्ज - जागो जागो है मतवारी राज दुलारी ।

जै जै जै शब्द उचारी सुरगन मुनि सब होय सुखारी ।
दुःख विलाय गये सब भारी अरु आनन्द मन मोद
अपारी । ॥टेर ॥

सब दानव दल खोज खपायो, सुरगन फिर निज निज
पद पायो,
अरु हरषित हो मंगल गाये, झार झार झार फुलन झार
डारी, जै जै जै ॥१॥

राग - भैरवी

तर्ज - जै जै जै कन्हैयालाल की रे ।
जै जै अंबिके अंबिके अंबिके रे,
जै जै अंबिके अंबिके अंबिके रे । ॥टेर ॥

हां हां सारन काज सुरन के रे,
आई रंभा रूप बनाय केरे, जै जै ॥1॥

हां हां रक्तबीज को खपाय केरे,
पीयो पीयो है रक्त अघाय केरे, जै जै ॥2॥

हां हां चंड अरु मुँड विडार के रे,
मारे शुंभ निशुंभ पछार केरे, जै जै ॥3॥

हां हां विश्व चराचर धार केरे,
कर पालन लेत संहार केरे, जै जै ॥4॥

हां हां नेति नेति बखान केरे,
सब वेद थके गुण गाय केरे, जै जै ॥5॥

हां हां देव सभी कर जोर केरे,
यही वर मांगे सिर नायं केरे, जै जै ॥6॥

हां हां भव भव निज भक्तन केरे,
कीजो सिअृ काज यूं आय केरे, जै जै ॥7॥

राग भैरवी

अब सुनिये चरित्र महात्म, हेरी अब सुनिये चरित्र
महात्म । ।ठेर ॥

। ।दोहा ॥

मेरे उत्तम चरित्र को, सुने करे गुणगान,
ताको फल महात्म कहूँ, सुनों देव दे कान । ।1 ।।

चोर, राज, हथियार औ, अग्नि शत्रु महान,
इनका भय व्यापे नहीं, जो गुण करे बखान । ।2 ।।

सुख सम्पति संतति बढ़े, मिटे तीन संताप,
जन्म जन्म के पुनि कटे, कोटि प्रबल जो पाप । ।3 ।।

पुत्र जन्म पूजा तथा, व्याव यज्ञ बलिदान,

ऐते मंगल कार्य में, अवश्य करो गुणगान । ।4 ।।
या घर में नित होत है, चण्डी का गुणगान,

वहां पर मैं निश दिन रहूँ, करन हेतु कल्याण । ।5 ।।

बधाई

तर्ज - रंगीली आज की घरियां ।

रंगीली आज की घरियां । ।ठेर ॥

बजत है इन्द्र के बाजे, लगी रंग प्रेम की झरियां । ।1 ।।

छवि दरबार की नीकी, करत है नाच सुरपरियां । ।2 ।।

चले सब चाल ठिमठिमरी, करे झंकार नूपरियां । ।3 ।।

कहूँ क्या बात जलसे की, जातबलि 'राम' किंकरियां । ।4 ।।

कथा महातम्य

तर्ज – कथा रो रस बिंदरावन सूं आयो ।

कथा रो रस सुधा सिंधु सूं आयो, हां रे माने श्री गुरुनाथ
पिलायो, कथा रो रण मणि रे द्वीप सूं आयो । ।ठेर । ।

सकल पुरानन रो बीच बड़ो इक,

हाँ रे ओ तो देवी पुराण कहायो । ।1 । ।

इणरे पढ़न सुणन रो महात्म,

हाँ रे ओ तो वेद चार यश गायो । ।2 । ।

जिण यह कथा सुणी औ सुणाई,

हाँ रे वो तो सब तीरथ फल पायो । ।3 । ।

वसुदेव और देवकी सुनी जब,

हाँ रे वे तो कृष्ण सो लाल खिलायो । ।4 । ।

इक चित्त होय सुणो सब भाई,

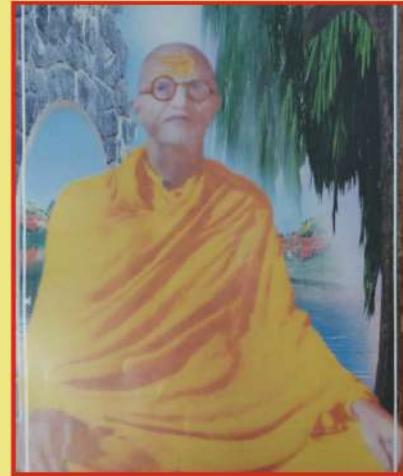
हाँ रे सिद्ध कारज हो मन चायो । ।5 । ।

‘राम’ कहे गुरुदेव कृपा कर,

हाँ रे म्हाने शुभ अवसर बगसायो । ।6 । ।



स्वामीजी की महिमा
तर्ज़ : उमराव थारी बोली प्यारी लागे



दिव्यानन्द स्वामी थारां जग गुण गावे महाराज,
स्वामीजी हो हो महाराज
उग्नीसो चौपन है संवत कार्तिक शुक्ला तांही ।
चवदश तिथि राम है जन्मे हरकलाल घर माई ।
स्वामीजी माथुर अल है भिवाणी कहायो हो राज
स्वामीजी हो महाराज ॥1॥

गुरु मण्डप में मठाधीश गुरु बिरदलाल महाराज,
श्रीविद्या की शिक्षा दीनी जानत सकल समाज,
,स्वामीजी गुरु ने भक्ति प्रेम रस पायो हो महाराज ।
स्वामीजी हो महाराज ॥2॥

अम्बे अम्बे यश गुण गायो पुस्तकें लिखि अनेक
शक्ति सुयश और अम्बिका चरित्र तो बन गयो ग्रंथ सिरेक
स्वामीजी सुन्दर रागों में ग्रन्थ बनायो हो महाराज,
स्वामीजी हो महाराज ॥3॥

कायस्थ धर्म प्रचारक मण्डली नयाबास के माही,
सत्संग कथा कीर्तन जरिये, धर्म प्रचार के ताही,
स्वामीजी थारी मण्डली ने लोग सरायो हो महाराज,
स्वामीजी हो महाराज ॥4॥

संवत दोय हजार के दस में असाढ़ शुक्ला ताही,
गुरु पूनम को दीक्षा लीनी सन्यासी के ताही,
स्वामीजी थाने गुरु शिवानन्द भायो हो महाराज,
स्वामीजी हो महाराज ॥५॥

संवत दोय हजार अडतीसा माही नवरात्रि ताही,
सृष्टि को है तज दियो प्राणा मेड़ता रोड़ के माही,
स्वामीजी धन-धन यश थे खूब कमायो हो राज,
स्वामीजी हो महाराज ॥६॥

सूरदास और नरसि कबीरो थी एक मीरा बाई,
भक्ति कीनी गायन में और मुकित का वर पाई,
स्वामीजी वैसी गान में इष्ट रिझायो महाराज,
स्वामीजी हो महाराज ॥७॥

कायरथ धर्म प्रचारक मण्डली, अरु कायरथ सरदार
बंशीलाल माथुर भजे, विनवे बारम्बार,
स्वामीजी सत्संग भक्ति मार्ग बतायो महाराज,
स्वामीजी हो महाराज ॥८॥